राज कॉमिक्स

संख्या 585

अश्वराज और अश्ववट

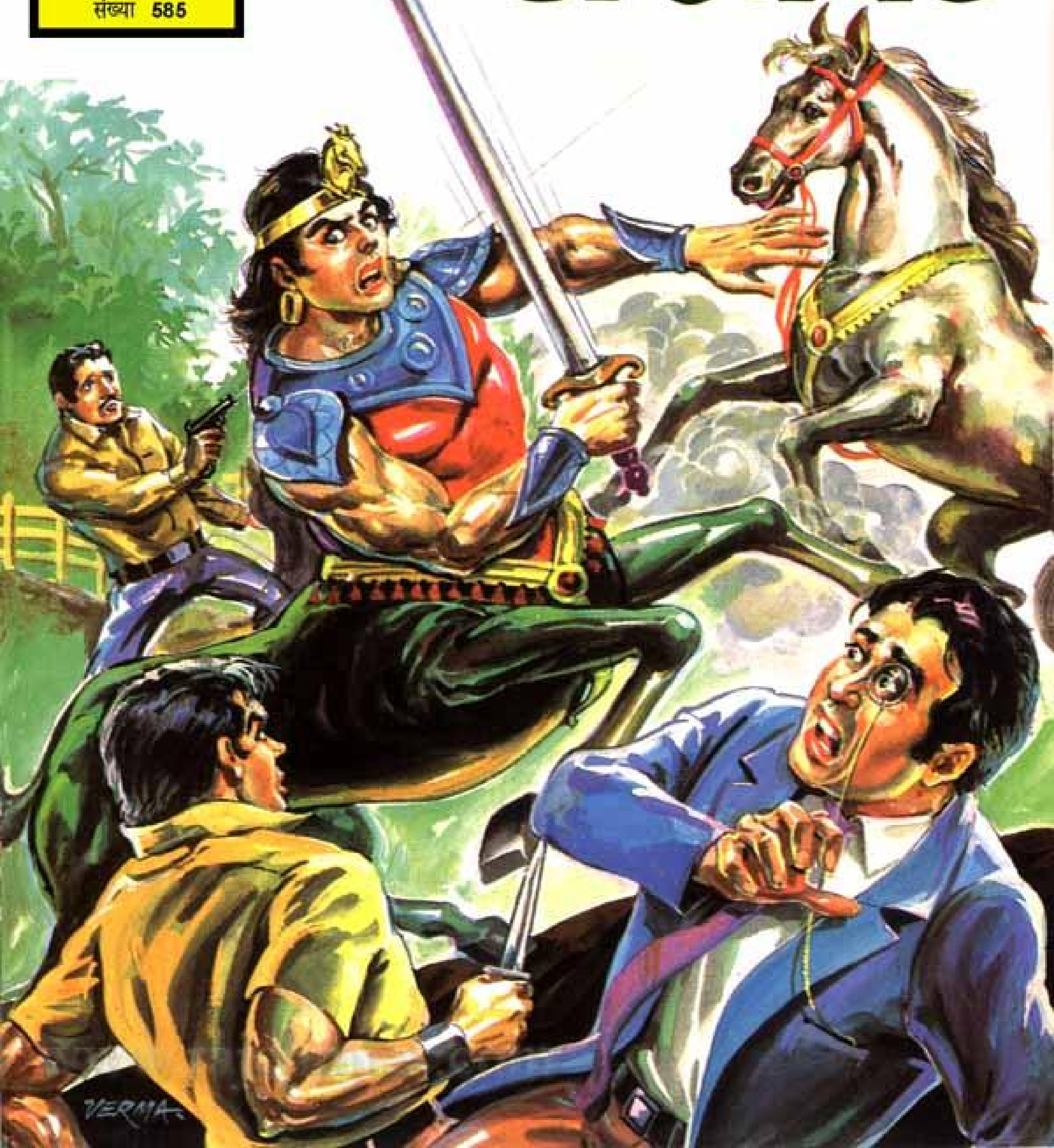

1363 GOYAL

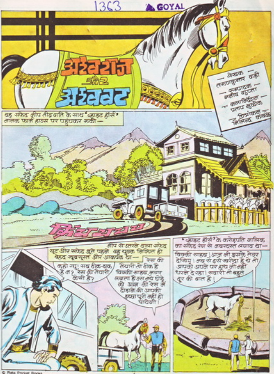

© Raja Pocket Books

और विक्की ने आज तक जिस घोड़े पर हाथ धरा है, उस पर सवारी जरूर की है। आज मैं इसे सीधा कर दूंगा।
चाबुक लाओ!
विक्की आ पहुंचा था दूध जैसी रंगत लिए उस घोड़े के निकट। निःसंदेह अश्ववट ही था वो—
क्यों बेटे ताकत! तेरा नाम ताकत इसलिए तो नहीं रखा था कि तू हम पर ही अपनी ताकत आजमाए।
हिनन न...
सड़ाक
हिन
सड़ाक
तेरे शरीर पर लाल लकीरें खींचना नहीं चाहता था मैं। पर तूने ही मजबूर कर दिया है मुझे।
लेकिन अब चाबुक की ये मार तुझे सीधा कर देगी।
सड़ाक
अचानक अश्ववट ने विक्की को अपने सिर की टक्कर मारकर दूर उछाल दिया—
आह!
धड़ाक
अरे! उसने विक्की साहब को टक्कर जड़ दी।
और तब! खौफ से फैलती ही गईं विक्की की आंखें तब—
मुझ पर चाबुक बरसाने के बाद अपनी हड्डियों को भी तू साबुत नहीं बचा पायेगा इंसान!
अरे बाप रे! दो सिर वाला घोड़ा।
झटके से उछलकर खड़ा हो गया विक्की—

और फिर खुरों की उस ठोकर से दूर जा पड़ा विक्की —
आह
हिनननन
तेज कराह फूट पड़ी विक्की के गले से —
अश्ववट को पुनः अपनी ओर आता देख विक्की पीछे हटता चला गया —
मेरे बंधन खोल दे। फिर तेरी बहादुरी देखूंगा।
इस घोड़े में अकर कोई भूत समा गया है। एक बोलने वाला घोड़ा?
विक्की साहब! आपको चोट तो नहीं लगी?
इसे कुछ दिन भूखा रखेंगे तो इसकी अक्ल खुद ठिकाने लग जायेगी।
नहीं! अगर ये घोड़ा तो पागल लगता है।
बोलने वाला घोड़ा? अगर किसी से कुछ कहा तो ये लोग मेरी खिल्ली उड़ायेंगे या मुझे पागल समझेंगे।
पूर्व कॉमिक्स 'अश्वराज और आज के रावण' में आपने पढ़ा कि विपुलकुमार नामक एक स्कूली छात्र अश्वराज के इतिहास को जानने के बाद उसका वर्तमान जानने को बेहद इच्छुक हो उठता है —
उफ! भविष्य नामक यंत्र से होकर कहां गया अश्वराज?
इधर अश्वराज भविष्य नामक यंत्र से निकलकर इसी शहर में आ जाता है —
कोई अन्य शहर मालूम पड़ता है यहां?
पंचाश्व, अपने रथ और कुदुम-पुष्पी की तलाश थी उसे —
शहर में प्रवेश के साथ ही उसकी टक्कर कुछ बदमाशों के साथ हो जाती है। जहां विपुलकुमार अश्वराज की बदमाशों की दोस्ती से रक्षा करता है।

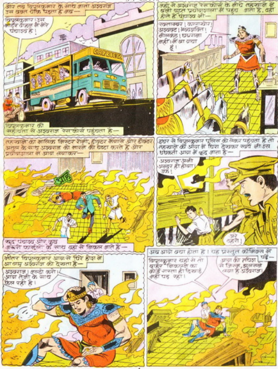
और तब विपुलकुमार के साथ आता अश्वराज उस वक्त ठीक पहुंचता है जब—
विपुलकुमार! उस मोटर व्हीकल में मेरे पंचाश्व हैं!
विपुलकुमार की सहायता से अश्वराज रेस कोर्स पहुंचता है—
जहां से अश्वराज रेस कोर्स के नीचे तहखाने में बनी गुप्त प्रयोगशाला में पहुंच जाता है, वहीं होते हैं पंचाश्व भी—
रक्ताम्बर! कल्माषोर! अश्वघट! अश्वशक्ति! नीलकंठ! घबराना नहीं! मैं आ गया हूं!
तहखाने का मालिक मिस्टर शेठी, डॉक्टर मेनासे और डॉक्टर अरुन के साथ अश्वराज को मारने की चेष्टा करते हैं और प्रयोगशाला में आग लगाकर—
आह
खुद पंचाश्व और कुछ जरूरी फार्मूलों के साथ वहां से निकल आते हैं—
इधर से विपुलकुमार पुलिस को लेकर पहुंचता है तो तहखाने को आग में घिरा देखकर स्वयं भी उस धधकती आग में कूद जाता है—
अश्वराज अभी अन्दर ही होगा। उफ!
अरे ठहरो!
भीतर विपुलकुमार आग से घिरे होश में आ आए अश्वराज को देखता है—
अश्वराज! जल्दी करो! आग तेजी के साथ फेल रही है।
अब आगे क्या होता है। यह प्रस्तुत कॉमिक्स में पढ़ें—
विपुलकुमार यहां से तो बाहर निकलने का कोई रास्ता ही दिखाई नहीं पड़ रहा।
आग की तपिश से जिस्म झुलसने लगा है अश्वराज।

इस दीवार को तोड़ने का प्रयास करना होगा।
टनाक
अश्वराज!
उफ! आग काफी फैल गई है।
अश्वराज भी समझ रहा था स्थिति की गम्भीरता को।
अश्वराज परिवर्तित हो गया अपने इच्छाधारी रूप में—
इसके सिवाय दूसरा कोई रास्ता नहीं।
उफ!
अश्वराज के उस रूप को प्रत्यक्षतः देखकर भौचक्का हो उठा विपुलकुमार—
और अब वह दीवार इच्छाधारी अश्वराज की एक भी टक्कर न सह सकी—
जल्दी आओ विपुलकुमार! रास्ता खुल गया है।
ओह! यह तो कोई गटर मालूम पड़ता है।
गटर?
हाँ अश्वराज! गन्दे पानी की निकासी का नाला।
फिर शीघ्र ही गटर से बाहर निकल आये दोनों—
अश्वराज! इस संसार में रहकर तुम्हें अपनी इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग नहीं करना चाहिए अन्यथा यहाँ के लोग तुम्हें शैतान समझ लेंगे।
तुम ठीक कहते हो विपुलकुमार! अपनी इस शक्ति का प्रयोग मैं यहाँ नहीं करूँगा।
और तब—
विपुलकुमार! इस नये संसार में तुमने मेरी जो मदद की है, वह मैं कभी भूल नहीं पाऊँगा, लेकिन अब मुझे तुमसे विदा लेनी चाहिए क्योंकि तुम्हारे माता-पिता भी तुम्हारी गैर मौजूदगी में परेशान हो रहे होंगे।

लेकिन अश्वराज! यह संसार तुम्हारे लिए हर कदम पर आश्चर्य का भंडार होगा। तुम्हें यहां अकेले कैसे छोड़ दूं! तुम्हें भी मेरे साथ चलना होगा।
जब तक पंचाश्व मुझे नहीं मिल जाते, तब तक यह मुमकिन नहीं है विपुलकुमार
अब तुम घर जाओ। मैं स्वयं तलाश कर लूंगा पंचाश्व को।
ठीक है। किंतु तुम्हें अपनी खोज शहर के हॉर्स-हॉल्ट से शुरू करनी चाहिए। हो सकता है वो लोग उन घोड़ों को बेचने की चेष्टा करें।
विपुलकुमार ने अश्वराज को बताया हॉर्स हॉल्ट का पता—
और फिर—
अश्वराज! अब मैं जाता हूं, लेकिन तुम अपना ध्यान रखना।
अश्वराज से जुदाई पर विपुलकुमार की आवाज भर्रा गई थी।
फिर शुरू हुई अश्वराज द्वारा पंचाश्व की खोज—
यहां है हॉर्स हाल्ट। ये तो घोड़ों का बाजार लगता है।
आइये भाई आइए। किधर है ध्यान। सात फुट ऊंचा हवाई घोड़ा लेम्प लेकर ढूंढने पर भी नहीं मिलेगा।
विचित्र लबादा पहने दिखते बूढ़े घोड़ों को पसंद करेंगे के लिए पैसा तो खर्चना ही पड़ता है।
ये जरूर कोई फिल्म वाला है जिसे अपने लिए घोड़े की तलाश है। तभी पूरी ड्रेस के साथ यहीं आया है।
घोड़ा लो, घोड़ी लो!
इसको देखो! ताकत का बेजोड़ नमूना है मेरा चंपक। दाम भी बिल्कुल वाजिब।

इसी से असली पूछताछ शुरू करता हूँ।
सुनो भैया! मुझे पंचाश्व की तलाश है, अगर तुमने देखे हों तो बताओ।
अजी छोड़ो यारो पंचाश्व को, मेरे रुस्तम के आगे उनकी क्या औकात?
एक-एक को पूछता चला गया अश्वराज—
रक्त जैसे लाल रक्ताम्बर... दूध जैसे सफेद अश्ववट को...
नहीं देखा भैया। घोड़ा लेना है तो यहाँ रुको वरना दूसरा ग्राहक आने दो।
??
ये तो उन्हीं घोड़ों के बारे में पूछ रहा है, जिन्हें हमने खुद यहाँ लाकर अब्दुल को बेचा है।
लेकिन यह है कौन?
और इसका हुलिया कितना विचित्र है?
और फिर—
क्यों बे? कौन है तू? और उन घोड़ों के बारे में क्यों पूछ रहा है?
म... मेरा नाम अश्वराज है। क्या तुम जानते हो मेरे पंचाश्व के बारे में?
हाँ हाँ, जानते हैं। हमने ही बेचे थे वो घोड़े। उन्हें हमारा बॉस शानदार समझ रहा था लेकिन वे तो बिल्कुल बेकार निकले।
कमबख्तों पर बिजली के झटकों का भी कोई असर नहीं हुआ और जो घोड़ा रेस न दौड़ सके वो तो बेकार ही हुआ न।
ओह! तो तुम उसी शैतान शेमी के आदमी हो। मुझे बताओ कि तुमने उन घोड़ों को कहाँ बेचा है?
क्यों? तू क्या उन घोड़ों का बाप लगता है?
मारो साले को। साला अपने शेमी बॉस को शैतान बोलता है।
हा
हा
हा

बदमाश टूट पड़े थे अश्वराज पर—
अभी इसको इसका नाम भी भुलाए देते हैं।
ठक्क
चाबुक खाई है कभी?
सड़ाक
ओफ्फ!
दूसरी तरफ से पड़े बदमाश के घूंसे से अश्वराज उछल गया—
धड़
एक साथ ही आक्रमण किया था उन चारों ने—
लेकिन शीघ्र ही संभल गया अश्वराज और—
ट
ना
क
आह
गले से आ लिपटी चाबुक ने अश्वराज को तुरन्त पीछे खींच लिया—
ओह
इसी क्षण अश्वराज के सिर पर पड़ी लोहे के पाइप की वह शक्तिशाली चोट—
ओह!
बुरी तरह चकरा गया था उसका मस्तिष्क।
उस बदमाश की ठोकर से अश्वराज घोड़ों के बीच उछल गया—
उफ

और तब खटाक से खुला वो चाकू, लेकिन इससे पहले कि वह अपने होश दुरुस्त करते अश्वराज के पेट में पेवस्त हो जाता—
ठहर जाओ शैतानो! अब्दुल्ला के सामने खुली गुस्ताखी करते हो।
अब्दुल्ला ने चाकू वाली उसकी कलाई को उमेठकर उसकी पीठ तक लगा दिया, और फिर-
देखता रहे हैं कि मेरी ठोकर खाकर तू कितनी दूर जाकर गिरता है।
ढक
लेकिन उसी समय अब्दुल्ला की गर्दन को जकड़ लिया उस चाबुक ने—
दुक्कन की लड़ाई में बीच-बचाव करने आ पहुंचा तू। अब तुझे ही पहले यमलोक पहुंचाता हूं।
आंखें बाहर को उबलने लगीं अब्दुल्ला की—
लेकिन तभी एक शक्तिशाली घूंसे की चोट से उसके मस्तिष्क पर अंधेरे का कब्जा होता चला गया—
धमक
और अब प्रलय नाच रही थी अश्वराज की आंखों में—
तुम चारों शैतानों को जीने से दिल ऊब गया लगता है।
ओह! उस चोट के बाद बड़ी जल्दी होश दुरुस्त कर लिए हुसन ने।
तुमसे निपटने के लिए मुझे अपने अस्त्र निकालने की जरूरत नहीं।
उफ
यह हमें मार डालेगा!

अश्वराज का वह प्रलयंकारी रूप देखकर वहां अधिक समय तक रुके न रह सके बदमाश, और—
भागो!
भागते कहां हो कायरो! अपनी चाबुक तो लेते जाओ।
भाग गए कायर!
आज तो तुमने भी मेरी बचाई है। चलो हिसाब बराबर।
हां! लेकिन मेरी जान बचाने का शुक्रिया!
अरे! तुम्हारे सिर से तो खून बह रहा है।
मामूली चोट है, ठीक हो जाएगी।
किसी भी चोट को मामूली नहीं समझना चाहिए। मेरा फार्म हाउस सामने ही है, मैं तुम्हारी ड्रेसिंग किए देता हूं।
क्या?
ड्रेसिंग यानी मरहम-पट्टी।
और तब राह में अश्वराज और अब्दुल्ला का आपस में संक्षिप्त परिचय हुआ—
फिर फार्म हाउस तक पहुंचते-पहुंचते अश्वराज ने अब्दुल्ला को अपने वहां पहुंचने का उद्देश्य भी बता दिया, तब—
अश्वराज! तुम बिल्कुल ठीक आदमी से टकराए हो। मैंने ही वो पांचों अद्भुत से दिखने वाले घोड़े हार्स हॉल्ट में बेचे हैं।
ओह!
उद्वेलित हो उठा अश्वराज—
कृपया मुझे बताइए कि पंचाश्व को कहां बेचा है आपने?
सफेद घोड़े के खरीददार के अलावा मैं किसी भी खरीददार के विषय में अधिक कुछ नहीं जानता अश्वराज!

उसको मूक मिस्रा करोड़पति घोड़ों का शौकीन विक्की नामक आदमी ले गया है जिसे सफेद रंग से अत्यधिक लगाव है।
और फिर शेष खरीदारों के विषय में भी अब्दुल्ला जो कुछ जानता था अश्वराज को बताता चला गया—
उधर विक्की के फार्म हाउस पर—
हिनन
रघु! चढ़ाओ इसे ऊपर!
सड़ाक
इसका भूत उतारने के लिए मुझे इसे किसी अच्छे तांत्रिक के पास ले जाना होगा। उफ! होलते वाला घोड़ा!
लेकिन इतनी आसानी से काबू में आ जाने वाली चीज नहीं थी अश्ववट—
हिनन
पुनः उत्तेजित हो उठा अश्ववट—
और—
हिनन
धड़ाक
आह
कोड़ा लेकर विक्की टूट पड़ा अश्ववट पर—
तेरा भूत कोड़े से मैं उतार देता हूं
सड़ाक
कोड़े की चोटों से तिलमिला उठा अश्ववट। परिणामस्वरूप—
थड़
आह!

हालांकि अपनी ओर से ज़बरदस्त फुर्ती दिखाई थी विक्की ने, लेकिन—
आह
विक्की को कुचलने के लिए उठ गए अश्ववट के पांव—
हिनन
आह
जबकि मौत के उस भयानक खतरे से अनभिज्ञ विक्की के मस्तिष्क में अंधकार से छूट रहे थे—
और अश्ववट के उस प्रहार से सहमा गईं थीं वे आंखें—
विक्की साहब!
उफ!
र... रस्सी लाओ! ताकत को रोको!
लेकिन—
उस शक्ति से टकराने के लिए अश्ववट से उलझ गए थे वे दो हाथ—
और आज परीक्षा थी उन हाथों की भी, जो कि हाथ थे अश्वलोक के चक्रवर्ती अश्वसम्राट अश्वराज के और प्रतिद्वन्द्वी था वो अश्व, जिसकी लगामें थामा करते थे, ये हाथ—
हिनन
ठीक वक्त पर मैं यहां आ पहुंचा अश्ववट! वरना तू एक बेगुनाह के खून से अपने खुर रंग लेता।
अरे! कौन है ये?
अश्ववट को पीछे खदेड़ने में सफल रहा अश्वराज—
इस पर शैतान अश्वबाज के सम्मोहन का असर अभी भी कायम है। अन्यथा ये मुझे देखते ही पहचान जाता।
हिनन
इस प्रयास में अश्वराज भी बुरी तरह से लड़खड़ा कर गिरा—

सरपट दौड़ निकला अश्ववट—
ओह! अश्ववट निकला जा रहा है और मुझे उसे किसी भी कीमत पर प्राप्त करना है।
ये कैसे जानता है कि ताकत का असली नाम अश्ववट है?
अश्वराज उछलकर सवार हुआ उस दूधिया घोड़े पर—
अश्ववट तो मिल गया, लेकिन रक्तासुर, कालाखोर, श्रव्यशक्ति और नीलकंठ कहां होंगे?
अश्वराज की मुद्रा पर सरपट दौड़ पड़ा रेस का वो घोड़ा—
लेकिन फिलहाल तो मेरे सामने अश्ववट को ही पकड़ने की समस्या है।
निःसन्देह अश्ववट नामक ये घोड़ा दुर्लभ है। रेस के मैदान का तूफान साबित होगा ये। इसे मैं छोड़ नहीं सकता।
चिक्की साहब! ताकत निकला जा रहा है।
दौड़ चली जीप भी अश्ववट और अश्वराज के पीछे—
इधर बेलगाम सरपट दौड़ा आ रहा था अश्ववट—
हिनननन...
कई दूसरे घोड़ों में खलबली मचाता हुआ...
...जो कि बाधक बन गए अश्वराज की राह में—
उफ़!
हिनन
हिनन

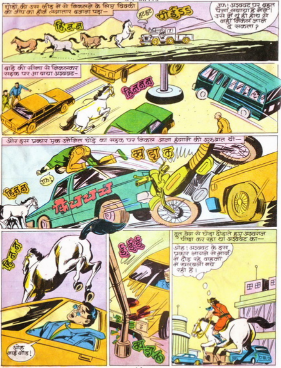
घोड़ों की उस भीड़ में से निकलने के लिए विक्की को जीप का हॉर्न लगातार बजाना पड़ा—
हिनन
हट हट
पीईऽऽ
उफ! अश्ववट पर बहुत पैसा लगाया है मैंने। उसे मैं यूं ही हाथ से नहीं निकल जाने दे सकता?
बाड़े की सीमा से निकलकर सड़क पर आ गया अश्ववट—
हिननन
और इस प्रकार एक उत्तेजित घोड़े का सड़क पर निकल आना हंगामे की शुरुआत थी—
खड़ाक
उफ!
हिनन
क्रिचचच
हिनन
ओह गाईं गॉड!
तूफान वेग से घोड़ा दौड़ाते हुए अश्वराज पीछा कर रहा था अश्ववट का—
ओह! अश्ववट के इस प्रकार भागने से भागी जा रहे वाहनों में खलबली मच रही है।

चौराहे से गुजरने वाले उस टेम्पो की टक्कर से खुद को नहीं बचा पाया अश्ववट—
उफ!
धड़ाक
हिनन
AIR TANKS
और इस पल चीख पड़ा अश्वराज—
नहींऽऽ
लेकिन शीघ्र ही आंखों में क्रोधित भाव लिये उठ खड़ा हुआ अश्ववट, और—
खनाक
हिनन
अरे बाप रे! आह!
बौखला कर होटल की उस इमारत में प्रवेश करता चला गया अश्ववट—
आह!
ओफ्फ!
उफ! ये घोड़ा किसका है? ये अस्तबल नहीं होटल है!
हिनन
अरे रे रे! रोको इसे!
PLAZA
HOTEL
हिनन
धड़धड़ाते हुए उसी समय प्रवेश किया अश्वराज के भी घोड़े ने—
अहा! कैसी भव्य जगह है। और अश्ववट इसी इमारत में प्रवेश कर गया है।
उफ! एक और घोड़ा और इस बार अजीबो-गरीब घुड़सवार भी। ये होटल तो अस्तबल ही मालूम पड़ता है।
होटल की इज्जत नीलाम हो जायेगी। होटल का मेन गेट बन्द कर दो। किसी घोड़े... मेरा मतलब न किसी को बाहर आने दो, न अंदर आने दो और पकड़ो उन्हें।

अश्ववट को तो छूना ही आसान नहीं था। पकड़ना! तौबा-तौबा।
हिनन
टप टपाक टप
घोड़ा?
घोड़ा होटल में कैसे घुस आया?
आह
इधर पारदर्शक लिफ्ट पर सवार 'गार्ड्स'—
उस रास्ते पर आगे बढ़ता हुआ घोड़ा छत पर ही आकर रुकेगा।
छत पर पहुंचकर गार्ड्स ने घेर लिया अश्ववट को और दरिन्दों की भांति टूट पड़े वे सब अश्ववट पर—
धाड़
धड़ाक
हिनन
तड़पकर बुरी तरह से हिनहिना उठा था वो—
और तब वह दृश्य गुजरा अश्वराज की निगाहों के सामने से—
नहीं! आह, अश्ववट!
ठहरो। ठहरो रुक जाओ।
अश्वराज की शक्तिशाली ठोकर ने उस बंदूकधारी गार्ड का थोबड़ा आबाद कर दिया—
इसे अश्ववट पर चलाने की चेष्टा मत कर शैतान!
आह!
अश्वराज की आंखों में कहर नजर आने लगा—
उसके जिस्म पर पड़ा तुम्हारा मुक-मुक वार अश्वराज के सीने पर चोट कर रहा है।

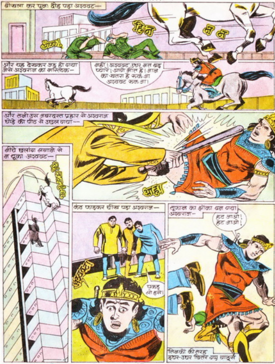
बौखला कर पुनः दौड़ पड़ा अश्ववट—
हिन
न न
ओफ्फ!
और यह देखकर जड़ हो गया जैसे अश्वराज का मस्तिष्क—
नहीं! अश्ववट उधर मत बढ़ प्यारे! आगे मौत है! जान का खतरा है रुक जा अश्ववट रुक जा!
और तभी उस जबरदस्त प्रहार से अश्वराज घोड़े की पीठ से उछल गया—
आह!
नीचे छलांग लगाने से न चूका अश्ववट—
कंठ फाड़कर चीख पड़ा अश्वराज—
अश्ववट!
पकड़ लो इसे!
तूफान का झोंका बन गया अश्वराज—
हट जाओ! हट जाओ!
तिनकों की तरह इधर-उधर छितर गए गार्ड्स

अश्वकट की ओर उठ गई थीं कई निगाहें —
अरे!
उफ!
ये घोड़ा ऊपर से कहां से आ रहा है?
ओह नो!
परखच्चे उड़ जायेंगे इसके।
कई मीटर ऊपर तक उछल गया स्विमिंग पूल का पानी —
छपाक
बचाओ
बड़ी ऊंचाई से छलांग लगाई है इसने स्विमिंग पूल में नहाने के लिए।
डार्ट मारो।
हिनन..
चिम्छुक
लड़खड़ा कर वहीं गिर पड़ा अश्वकट —
हिननननन...

उस ट्रेलर पर लाद दिया गया अश्ववट को—
इसे वापस फार्म पर ले चलो!
तांत्रिक को ही फार्म हाउस पर लाना होगा!
उस समय छत पर आ पहुंचा था पुलिस-दल—
यही लगता है उस घोड़े का मालिक!
अश्ववट को कुछ हो जाता तो मैं इन्हें कभी माफ नहीं करता!
अरेस्ट हिम!
हे मिस्टर! यू आर अन्डर अरेस्ट!
ये क्या कह रहा है? इसकी ये भाषा मेरी समझ में नहीं आ रही है!
मैं आपकी भाषा नहीं समझ पा रहा हूं!
शायद ये इंग्लिश नहीं समझता!
मैं तुम्हें एक सार्वजनिक स्थल पर हंगामा मचाने के जुर्म में गिरफ्तार करता हूं! मुझे पुलिस इंस्पेक्टर गिरीश कहते हैं!
पुलिस? ओह!
अश्वराज के कानों में गूंज उठे विपुलकुमार के वे शब्द—
अश्वराज! इस समय तुम बीसवीं सदी में हो जहां राजा के स्थान पर राष्ट्रपति! महल की जगह राष्ट्रपति निवास और सैनिकों की जगह होती है पुलिस!
इन...इंस्पेक्टर! यहां के नियमों के मुताबिक अगर अनजाने में मैंने कोई जुर्म किया है तो मैं आत्म समर्पण करता हूं!
ले चलो इसे!

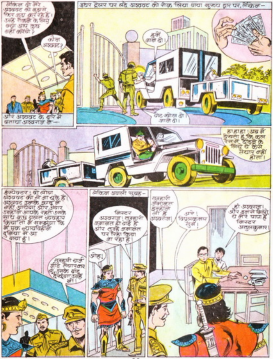
लेकिन वो मेरे अश्वट को मुझसे फिर जुदा कर रहे हैं। उन्हें रोकने के लिए क्या आप कुछ नहीं करेंगे?
कौन अश्वट?
और अश्वट के बारे में बताया अश्वराज ने—
उधर ट्रेलर पर लदे अश्वट को रोक लिया गया मुख्य द्वार पर, लेकिन—
हमें जाने दो।
गेट खोल दो। जाने दो।
हा हा हा! अब मैं देखता हूं कि कल रेस में दौड़ने के लिये ये कैसे तैयार नहीं होता।
इंस्पेक्टर! वो लोग अश्वट को ले जा चुके हैं। अश्वट उनके काबू में नहीं आयेगा और अगर उन्होंने आपके रहते उसके साथ कुछ गलत व्यवहार किया तो मैं समझूंगा कि मैं एक न्यायविहीन दुनिया में आ गया हूं।
तुम्हारी शर्त और तैयारकर दें, उसके बाद देखूंगा उन्हें भी।
लेकिन अगली सुबह—
मिस्टर अश्वराज! तुम्हारी जमानत हो गई है और तुम्हें जमानत पर रिहा किया जा रहा है।
ओह!
तुम्हारी जमानत इन्होंने ली है अश्वराज।
अरे! विपुलकुमार तुम!
हां अश्वराज। और इनसे मिलो, ये मेरे पापा हैं मिस्टर अतुलकुमार।

हैलो अश्वराज! मुझे विपुलकुमार ने सब कुछ बता दिया है।
?!
पापा! अश्वराज को हैलो करना नहीं आता। ये तो प्रणाम समझते हैं।
फिर बाहर आकर—
कार में बैठो अश्वराज!
हा हा हा
ओह! ये तो वही कार वाहन है जो बिना घोड़ों के चलता है।
किंतु विपुलकुमार! तुम्हें मेरी गिरफ्तारी का पता कैसे चला?
दरअसल अश्वराज! तुमसे अलग होने के बाद मैं वहां से गया ही नहीं था
चुपचाप, छिपता-छिपता मैं तुम्हारा पीछा कर रहा था—
हमारी दुनिया में आकर अगर तुम्हें किसी मुसीबत में पड़ जाते अश्वराज तो यह हमारे लिए शर्म की बात होती।
और फिर वह रात तुमने मुक पार्क में गुजारी—
सुबह अपनी तलाश फिर से शुरू करूंगा।
उस रात चाहकर भी सो न सका मैं। तुम्हारे किसी भी वक्त चले जाने का खतरा जो था।
हॉर्स हॉस्टल से लेकर चिक्की के फॉर्म हाउस तक—
हिनननन
अश्ववट! उफ!
मुझे बचाना होगा उस निर्दोष मानव को, जो कि अश्ववट की उग्रता का शिकार हो रहा है।
अश्ववट! ये तो अश्ववट है!

उसके बाद तुम सफेद घोड़े पर सवार होकर अश्ववट के पीछे चले गये। और मैं विक्की की जीप के पीछे लगे ट्रेलर में आ छिपा—
अश्वराज का पीछा करने का फिलहाल यही तरीका उपयुक्त है।
और फिर होटल प्लाजा के हंगामे के बाद मैंने तुम्हें गिरफ्तार होते देखा, तब मैंने यही सोचा की—
अश्वराज को कानूनी अड़चनों से केवल पापा की मदद से ही निकाला जा सकता है। क्योंकि वे एक वकील हैं।
और अश्वराज! इस प्रकार मैं तुरन्त घर पहुंचा, जहां मम्मी-पापा मेरे लिये परेशान थे और तब सारी बातें उन्हें समझाकर मैं पापा को पुलिस स्टेशन ले आया। तुम्हारी जमानत के लिये।
ओह!
विपुलकुमार! सचमुच तुमने मेरे लिये जो कुछ किया, उसे मैं कभी नहीं भूल सकता।
और अश्वराज! तुम जमानत पर रिहा हुये हो। कानून के मुताबिक तुम पुलिस की इजाजत के बिना यह शहर नहीं छोड़ सकते।
ओह!
लेकिन फिलहाल हम कहां जा रहे हैं? मुझे अश्ववट की चिंता है। वे लोग न जाने उसके साथ क्या सुलूक करें?
वे लोग उसे जरूर रेस में भाग लेने पर विवश करेंगे।
घबराओ नहीं अश्वराज! मैं तुम्हारे साथ हूं। अश्ववट तुम्हें जरूर मिल जायेगा।
इधर होश आ गया अश्ववट को और—
उफ! कौन हैं ये लोग? कहां आ गया हूं मैं?

शैतान अश्वराज कहाँ गया?
शैतान अश्वराज ने हम पाँचों यानी मेरे अलावा रक्ताक्षर, कालाखोर, अश्वशक्ति और नीलकंठ पर सम्मोहन जादू छोड़ा था...
लेकिन। उफ। यह मैं कहाँ आ गया हूँ? अश्वराज कहाँ है? कहाँ हैं रक्ताक्षर, कालाखोर, अश्वशक्ति और नीलकंठ?
और कौन लोग हैं ये? कुछ विचित्र से लग रहे हैं ये मुझे। इनकी वेशभूषा विचित्र है। एक अनजाना संसार मेरे सामने है।
विक्की साहब! ये तो जबरदस्त ढंग से शांत हो चुका है।
लगता है इसका भूत उतर चुका है।
इस बार विक्की के निकट पहुँचने पर उत्तेजित न हुआ था अश्ववट—
तू ठीक है न ताकत! आज तुझे मेरे साथ घुड़दौड़ में भाग लेना है।
ताकत? घुड़दौड़
जब तक... अश्वराज नहीं मिल जाता, जो ये चाहते हैं, मुझे इनके लिए करना चाहिए!

तब—
ओह! तो ये है वो मैदान जहां मुझे दौड़ में भाग लेना है।
इसी पल चौंक उठे दर्शक दीर्घा में उपस्थित शेखी और उसके साथी—
अरे! विक्की वाला ये सफेद घोड़ा तो वही है, जिसे अपनी लाख चेष्टाओं के बाद भी हम रेस के काबिल न बना सके थे और इसलिए हमने उस घोड़े को बेच डाला था।
शेखी साहब! हमारे ब्लैक हॉर्स नम्बर पांच के अलावा आज कोई नहीं जीतेगा।
हुंह! मैंने नम्बर पांच को जो दवा खिलाई है, उसके असर से उसका मुकाबला सचमुच कोई नहीं कर सकता।
दौड़ शुरू होने का सिग्नल हुआ—
ठेंय
आरम्भ हो गई घुड़दौड़—
नम्बर पांच
नम्बर पांच
नम्बर तीन
शंकर कमाल दिखा दे आज
शेखी इत्यादि की स्तब्ध घोड़ हवा के झोंके के समान अचानक उन सब घोड़ों से आगे निकल गया—
अरे!
उफ! ये तो तूफान साबित हो रहा है। इसने हमारे नम्बर पांच को पछाड़ दिया!

और यही वह पल था जब कि अश्वराज ने विपुलकुमार के साथ दर्शक दीर्घा में प्रवेश किया—
वो देखो अश्वराज, विक्की साहब अश्ववट के साथ रेस में भाग ले रहे हैं।
ओह!
लेकिन हमें रेस खत्म होने का इंतजार करना होगा। उसके बाद ही विक्की से बात करेंगे।
इधर ताकत की जबरदस्त सफलता से उत्तेजना के मारे विक्की का दिल बज रहा था धाड़-धाड़।
और जीत गया अश्ववट वह रेस—
FINISH
शाबाश ताकत! कमाल कर दिया तूने।
न जाने मैं अब कभी अश्वराज तक पहुंच भी पाऊंगा या नहीं।
और तब—
आओ अश्वराज! रेस जीतने के बाद विक्की अश्ववट को लेकर हॉर्स बॉक्सी की ओर गया होगा।
इधर अश्ववट को ट्रेलर पर चढ़ाने के बाद जैसे ही विक्की खुद भी जीप में सवार हुआ—
चीखने या चिल्लाने की कोशिश मत करना, वरना गोली मार दूंगा।
मिस्टर शेमी! तुम! यह क्या हरकत है?
ओह कौन हो तुम?
ज्यादा सवाल नहीं!
एक झटके से आगे बढ़ गई जीप, और तभी—
उफ! अश्वराज! कुछ गड़बड़ हुई लगती है।

ओह तुम! शेमी और उसके गुण्डे विक्की और ताकत को न जाने कहाँ ले जा रहे हैं।
शेमी? ओह! तो मुझे बार फिर वो शैतान मुझे अश्वट से दूर कर देना चाहती है।
हमें कार द्वारा उनका पीछा करना चाहिए।
और फिर शेमी के फार्म पर—
विक्की! इस कागज पर हस्ताक्षर कर दो। इसमें लिखा है कि ताकत को तुमने हमें बेचा।
हरगिज नहीं! मैं ताकत को नहीं बेचूंगा।
!
तो फिर मरने के लिए तैयार हो जाओ, क्योंकि तुम्हारी मौत के साथ ही ताकत पर हमारा अधिकार होगा।
!
ये लोग ठीक नहीं हो सकते!
और इधर स्थिति की गम्भीरता को समझ रहा था अश्वट—
लेकिन इससे पहले कि ट्रिगर पर कस जाती शेमी की उंगली—
मैं जानता हूं शैतान कि ये शस्त्र कितना घातक है?
ओह!
अरे! ये तो वही है।
और इधर अश्वट का रोम-रोम उत्तेजित हो उठा सामने अश्वराज को देखकर—
अश्वराज! उफ! तुम आ पहुंचे अश्वराज!
खूंटा तुड़ाने को मचल उठा अश्वट —

विपुलकुमार आ पहुंचा अश्ववट के निकट—
अश्ववट! जुदाई के दिन खत्म हो गए। अब अश्वराज को तुम हासिल हो सकोगे।
हिनन..
ठहर जा छोकरे! ज्यादा होशियारी मत दिखा।
आह!
तुम भी मत हिलना!
इधर खून उतरा हुआ था अश्वराज की आंखों में—
रोमी! शैतान! तेरे कारण ही अश्वराज को पंचाश्व मिलते-मिलते रह गए और अब जब अश्ववट उसे मिला तो तू उसे फिर से अश्वराज से जुदा कर देना चाहता है।
रुक जा अश्वराज! वरना इस छोकरे सहित तू भी मारा जायेगा और बचेगा तेरा घोड़ा भी नहीं।
?
हिन न..
शाबाश अश्वी!
और अश्ववट की आंखों की ओर देखता चौंक पड़ा अश्वराज—
अश्ववट मुझे पहचान गया है। मैं उसकी आंखों में पहले जैसी चमक देख रहा हूं।
हिनन.. प्रणाम अश्वराज!

भाव-विभोर हो गया अश्वराज—
इसका मतलब इस घर से शैतान अश्वराज का सम्मोहन खत्म हो गया है।
और यह जरूर तब हुआ होगा जब ये उस बहुमंजिला इमारत से नीचे कूदा था। उफ!
हा हा हा! बांध दो अश्वराज को भी विक्की के साथ।
विपुलकुमार उसके पिता और अश्वकट की जान खतरे में है।
और मैं इसका आदेश मानने पर विवश हूं।
अश्वराज को विक्की के साथ बांध दिया गया।
उफ! मेरा मददगार भी मुसीबत में फंस गया।
अच्छी! चला दो जीप चढ़ा दो इन दोनों पर।
चीख पड़ा वह दृश्य देखकर विपुलकुमार—
अश्वराज! हमारी परवाह मत करो। तोड़ डालो ये बंधन और इन शैतानों को खत्म कर दो। आह!
धक्का देकर करेगा उससे पहले तुझे गोली मार दूंगा।
इधर अश्वराज पर संकट देखकर तड़प उठा अश्वकट, और—
खटाक
मैं आ रहा हूं अश्वराज!
आह!

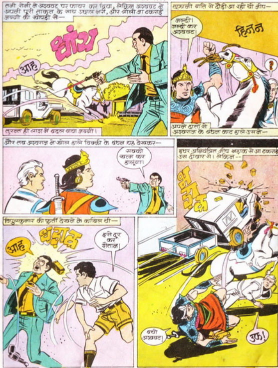
तभी शेखी ने अश्ववट पर फायर कर दिया, लेकिन अश्ववट ने अपनी पूरी ताकत के साथ उछाल भरी, और गोली जा टकराई जग्गी की खोपड़ी से—
धांय
आह
तुरन्त ही लाश में बदल गया जग्गी।
तूफानी गति से दौड़ी आ रही थी जीप—
जल्दी। जल्दी कर अश्ववट।
हिनन
?
अपने दांतों से अश्वराज के बंधन काट डाले उसने—
और तब अश्वराज ने खोल डाले विक्की के बंधन यह देखकर—
सबको खत्म कर डालूंगा।
इधर अनियंत्रित जीप भड़ाक से आ टकराई उस दीवार से। लेकिन—
विपुलकुमार की फुर्ती देखने के काबिल थी—
आह
धड़ाक
इसे दूर कर शैतान।
बचो अश्ववट।
उफ!

अश्वराज! ये तो मेरे एक ही प्रहार से बेहोश हो गया!
और अब शेष बचे बदमाशों पर टूट पड़ा अश्वराज का कहर—
खेल खत्म हो चुका है तुम्हारा शैतानों!
आह
उफ
आह
शीघ्र ही धूल चाटने लगे शेष बदमाश—
और तब भावविह्वल होकर आपस में लिपट गए दोनों—
अश्ववट! तुम्हारी तलाश में कहाँ-कहाँ नहीं भटका मैं।
अश्वराज!
हिनननन
??
??
इधर असलकुमार विक्की को बता रहे थे अश्वराज और अश्ववट के विषय में—
और तब—
अश्वराज! मुझे तुम्हारे और अश्ववट के विषय में सब कुछ पता चल चुका है।
आज तुम दोनों के कारण ही मेरी जान बच सकी है।
अश्वराज! अश्ववट तुम्हारा है! तुम्हारा ही रहेगा। मैं इसे तुम्हें उपहार में देता हूँ।
धन्यवाद दोस्त!
अश्ववट के साथ आगे बढ़ चला अश्वराज!

समाप्त